श्रीमतभगवद्गीतानुसार योग की परिभाषा

भारत का प्राचीन सहज राजयोग जो प्रसिद्ध है वह तो गीता-ज्ञान से ही आता है। गीता में भगवान ने बताया है-अणोरणियांसमनुस्मरेत् यः (गीता 8/9) अर्थात् आत्मा का स्वरूप क्या है और परमपिता परमात्मा का स्वरूप क्या है। आत्मा अति सूक्ष्म अणुरूप बताई है जिसकी रोशनी आँखों में से निकल रही है। शरीर में आत्मा है तो आँखों में रोशनी है; आत्मा निकल जाती है तो आँखों की रोशनी खतम हो जाती है; इसलिए आत्मा ज्योति स्वरूप भी है, जो शरीर के उत्तम अंग भृकुटि में निवास करती है; इसलिए कन्याओं-माताओं द्वारा अपनी भृकुटि में बिंदी लगाने की परम्परा चली आ रही है। टीका भी लगाते हैं जो आत्मिक स्मृति में टिकने की निशानी है और पुरुषों द्वारा युद्ध में विजय पाने की निशानी भी टीका ही है। इसलिए युद्ध में जाने से पहले माताओं-कन्याओं द्वारा पुरुषों को टीका लगाया जाता है।

गीता (8/10) में भी लिखा है-''भ्रूवोर्मध्ये प्राणमावेश्य सम्यक्'' अर्थात् भृकुटि में प्राण-रूप आत्मा को भली-भाँति स्थिर करना चाहिए। यह ज्योतिस्वरूप अणुरूप आत्मा एक अत्यंत छोटी बैटरी के मुआफिक है, जो सृष्टि के आदि सतयुग से ही शरीर की इन्द्रियों के द्वारा सुख भोगते-2 कलियुग के अंत में बिल्कुल क्षीण हो जाती है। उस क्षीण हुई बैटरी को फिर से पावरफुल बनाने के लिए विशालतम चैतन्य जनरेटर के रूप में परमपिता शिव निराकारी आत्माओं के लोक परमधाम से इस मनुष्य-सृष्टि पर भारत में आकर कलियुग के अंत में खास भारतवासियों को और आम सारी सृष्टि के मनुष्यों को गीता-ज्ञान देकर आत्मा-परमात्मा और सृष्टि के आदि-मध्य-अंत के रहस्य को समझाता है। भगवान बताता है कि जैसे आत्मा ज्योतिबिंदु है, निराकार है, वैसे परमपिता शिव भी निराकार है, ज्योतिबिंदु है, ज्योति स्वरूप है। आज भी जिसकी आप समान बनी नं.वार यादगारों में सारे भारत में 12 ज्योतिर्लिंगम की बहुत मान्यता है।

जैसे चैतन्य आत्मा गर्भ में जड़त्वमय साकार शरीर में प्रवेश करती है वैसे परमपिता शिव भी मनुष्य-सृष्टि के हीरो पार्टधारी एडम, आदम या आदिदेव शंकर के शरीर रूपी डेड तामसी तन में प्रवेश करता है और गीता-ज्ञान सुनाता है। जिसका यादगार चित्र सद्भाग्य का अर्जन करने वाले अर्जुन रूपी रथी और भगवान सारथी के रूप में इन्द्रियों रूपी घोड़ों की मन-बुद्धि रूपी लगाम पकड़े हुए गीता के मुख्य पृष्ठ पर दिखाया जाता है; परन्तु वह भगवान कृष्ण नहीं है, वरन् शिव-शंकर भोलेनाथ ही है; क्योंकि वही कलातीत कल्याण कल्पांतकारी है। ऐटम बमों से कल्प का अंत कराता है; इसलिए उसके नाम के आगे हर-2 बम-2 लगाया जाता है। वह आता है तभी ब्रह्मा द्वारा ब्राह्मण-देवताओं की नई सृष्टि की स्थापना के साथ-2 शंकर की प्रेरणा द्वारा ऐटम बमों का निर्माण भी कराता है। कृष्ण तो 16 कला संपूर्ण देवता है; भगवान नहीं। भगवान आकर बताता है कि मनुष्यों की आत्मा रूपी बैटरी जो कलियुग के अंत में तामसी बनने से क्षीण हो जाती है उसे किसी मुकर्रर शरीर रूपी रथ में आए हुए ज्योतिबिंदु परमपिता शिव की याद से ही 16 कला संपूर्ण देवता बनाया जा सकता है। ये 16 कलाएँ सतयुग में ही होती हैं जो कलाहीन कलियुग के अंत में और सतयुग आदि के संगम पर स्वयं भगवान ही सहज राजयोग सिखाकर संपन्न बनाता है।

तात्पर्य यह है कि मनुष्यात्माएँ परमपिता शिव के साकार में निराकार रूप को पहचान कर ही भगवान से योग लगाकर सतयुग के आदि में नर से नारायण जैसा बन सकती हैं। यही गीता में राजविद्या, राजयोग का उपदेश है।

गीता के नौवे अध्याय में भगवान ने बताया है-

राजविद्या राजगुह्यं पवित्रमिदमुत्तमम्।

प्रत्यक्षावगमं धर्म्यं सुसुखं कर्तुमव्ययम्।। 9/2

यह ईश्वरीय ज्ञान राजाओं की विद्या है, राजाई का रहस्य है, पवित्र है, सर्वोत्तम ज्ञान है, प्रत्यक्ष अर्थात् साक्षात् ईश्वर द्वारा जाना जाता है, धर्मानुकूल है, पालन करने के लिए अत्यंत सहज है और अविनाशी भी है।

मनुष्यमात्र जो अपन को देह समझ बैठे हैं, वे इसी उपदेश के माध्यम से अपनी ज्योतिबिंदु आत्मा का योग निराकार सो साकार ज्योतिलिंगम् ज्योतिबिंदु परमपिता परमात्मा से जोड़ सकते हैं और 16 कला संपन्न, संपूर्ण निर्विकारी, संपूर्ण अहिंसक, मर्यादा पुरुषोत्तम देवता बन सकते हैं। इसके लिए अभ्यासेन तु कौन्तेय वैराग्येण च गृह्यते (गीता 6/35)। ज्योतिबिंदु आत्मा और परमात्मा की एकाग्रता के बिना कोई ईश्वरीय प्राप्ति नहीं हो सकती। इसके अलावा मनुष्य-गुरुओं द्वारा बताया हुआ और कोई उपाय नहीं है। ये आसन-प्राणायाम देह के योग हैं, देह का भान बढ़ाने के योग हैं। इनसे आत्मा की सद्गति नहीं हो सकती। मनुष्य की मैंटेलिटी गिरती रही है और गिरती रहेगी; इसलिए महामृत्यु रूपी महाविनाश से पूर्व ही गीता में भगवान ने कहा है- सर्वधर्मान् परित्यज्य माम् एकम् शरणम् व्रज (गीता 18/66)- हिन्दू, मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई-इन सब धर्मों को छोड़कर मेरी शरण में आ जा। अब कलियुग के अंत में इन सब धर्मों के आधार पर बनाए गए अनेकानेक कर्मकांडों की युद्धभूमि में फिर से वही धर्मक्षेत्रे कर्मक्षेत्रे समवेता युयुत्सवः (गीता 1/1) वाली महाभारी महाभारत की विकराल परिस्थिति सामने खड़ी है और गुप्त रूप में पार्ट बजाने वाले साकार में आए हुए निराकार भगवान भारतीय कौरवों, पांडवों और विदेशी यादवों(यवनों)-क्रिश्चियंस आदि के बीच युद्धक्षेत्र में शीघ्र ही प्रत्यक्ष होने वाले हैं।

गुप्त वेश में सतयुग रचने आए शिव भगवान। अब तो जाग-2 इंसान।

नाहं प्रकाशः सर्वस्य योगमायासमावृतः।

मूढोऽयं नाभिजानाति लोको मामजमव्ययम्।। 7/25

योगमाया से ढका हुआ मैं सबके लिए प्रकट नहीं हूँ। यह मूढ़ जगत मुझ गर्भ से अजन्मा, अविनाशी पार्टधारी को नहीं जान पाता।

कलियुग जाने वाला है; सतयुग आने वाला है।